E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2021; 3(2): 30-33
Received: 16-01-2021
Accepted: 23-02-2021

मनोज कुमार सिंह
शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. डी.एस. सिंह बघेल
सेवानिवृत्त आचार्य शिक्षा, लाइफ लांग लर्निंग विभाग अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
मनोज कुमार सिंह
शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के प्रभावों का रीवा जिले के शहरी एवं ग्रामीण अंचल के छात्रों के अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

मनोज कुमार सिंह एवं डॉ. डी.एस. सिंह बघेल

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के प्रभावों का रीवा जिले के शहरी एवं ग्रामीण अंचल के छात्रों के अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। भारतीय शिक्षा आयोग ने शिक्षा को जनता के जीवन की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के संबंध करना आवश्यक माना है ताकि उसे सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का शक्तिशाली साधन बनाया जा सके। कक्षा 10वीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों को अपने आगे की पढ़ाई के लिए मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों का अभिरुचि तथा अभिक्षमता परीक्षण की व्यवस्था प्रारंभ की जा रही है। शोध क्षेत्र के शहरी तथा ग्रामीण अंचल में रमसा अभियान के द्वारा किए जा रहें प्रयासों से उनके शैक्षिक अधिगम में कोई अन्तर नही पाया जाता है। राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के मानीटरिंग की स्थिति संतोषजनक है।

मुख्यशब्दः राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान, प्रभाव, शहरी एवं ग्रामीण अंचल, रीवा जिला, अधिगम स्तर।

1. प्रस्तावना
अंधकार को कोसने से अच्छा है, एक दीपक जला दिया जाए और शिक्षा ही एक ऐसा दीप है जो अज्ञानता रूपी अंधकार को हमेशा के लिए खत्म कर सकता है। लोकव्यापीकरण अभिमत के रूप में सरकार इसी लक्ष्य पर काम कर रही है। इसका उद्देश्य है कि उन सभी पिछड़े बच्चों को शिक्षित करना जो कल तक अक्षर और किताबों की दुनिया से अनजान थे।

शिक्षा एक व्यापक शब्द है। यह जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है तथा प्रत्येक सभ्यता और सांस्कृति की जननी है। बच्चा संसार में कुछ पाशवीय प्रवृत्तियॉ लेकर पैदा होता है। उसकी इन प्रवृत्तियों में नियंत्रण रखकर उसकें अन्दर निहित आन्तरिक शक्तियों का एवं प्रतिभा का सर्वागीण विकास करना ही शिक्षा है। ''शिक्षा शब्द का सांस्कृति की 'शिक्ष्' धातु से निकला माना है जिसका अर्थ होता है सीखना या सिखाना।''

माध्यमिक शिक्षा अभियान के तहत 14–18 वर्ष आयु के विद्यार्थियों को अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा उपलब्ध कराना। अधिवास क्षेत्रों में माध्यमिक विद्यालय की सुविधा उपलब्ध कराना। समाज के आर्थिक रूप से कमजोर तबकों के लिए विशेष शिक्षा उपलब्ध कराना है। इसके अलावा नियमों के अनुसार माध्यमिक विद्यालय स्तर की शिक्षा को सुगम बनाना। कोई भी बालक सामाजिक, आर्थिक और असमर्थता के कारण शिक्षा से वंचित न रहें।

माध्यमिक शिक्षा का सार्वभौमीकरण की चुनौती का सामना करने के लिए माध्यमिक शिक्षा की परिकल्पना में आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है। इस संबंध मे मार्गदर्शक तत्व है – कहीं से भी पहुंच, सामाजिक न्याय के लिए बराबरी, प्रासंगिकता, विकास, पाठ्यक्रम एवं ढांचागत पहलू। माध्यमिक शिक्षा का सार्वभौमीकरण अभियान बराबरी की ओर बढ़ने का मौका देता है। यदि ये प्रणाली में मूल्य स्थापित किये जाते है, तो अनुदान रहित निजी विद्यालयों सहित सभी प्रकार के विद्यालय भी समाज के निचले वर्ग के बच्चों को उचित अवसर देना सुनिश्चित किया जाता है।

भारत में शैक्षिक विकास के ऊपरी स्तरों अर्थात् माध्यमिक शिक्षा (कक्षा 9 से 10) एवं वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा (कक्षा 11 से 12) के परिदृश्य में भी अनेक परिवर्तन आये है। कोठारी (1996, पृष्ठ–17) के अनुसार ''शिक्षा के ऊपरी (अर्थात् मिडिल स्तर के बाद के) चरणों के विस्तार के लिए जनता की मांग बढ़ रही है।'' माध्यमिक शिक्षा को प्रारंभिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु माना जाता है। सर्वशिक्षा अभियान और प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण की दिशा में किये जा रहे समस्त प्रयासों के कारण माध्यमिक शिक्षा के विस्तार में तेजी आयेगी। यह प्रबल रूप से स्वीकार किया जा रहा है कि भूमण्डलीकरण के इस दौर में प्राथमिक शिक्षा के बजाय माध्यमिक शिक्षा विकास का सशक्त माध्यम हो सकती है।

2. अध्ययन की आवश्यकता :

शोध क्षेत्र में इस अभियान की वस्तुस्थिति का आंकलन किया गया है। दूसरें क्षेत्रो में शोध क्षेत्र में इस अभियान की तुलना कर यह भी जानने का प्रयास किया गया है कि ऐसे कौन–कौन कारक है, जो इस अभियान के सार्थकता में बाधक है। साथ ही शैक्षिक क्षेत्र में इसे किस प्रकार प्रभावी रूप से लागू किया जा सकता है इसके बारे में भी दिशा निर्देशन प्राप्त किया गया है। शिक्षा के क्षेत्र में किये जाने वाले कार्यों का महत्व व्यापक होता है। शिक्षा में ऐसे विषयों में किये गये शोध कार्य जो वर्तमान शैक्षिक समस्याओं से संबंधित है, वे आज के स्थिति में अधिक महत्वपूर्ण होते है। शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य क्षेत्र में ही नहीं वरन् अन्य क्षेत्रों में राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के क्रिया प्रणाली, उसका क्षेत्र में अनुप्रयोग तथा इसके परिणामों को जानने में उपयोगी होगा। शिक्षा के किसी भी स्तर पर अपव्यय तथा अवरोधन की यर्थात स्थिति ज्ञात हो सकेगी, जिसमें सुझाव देकर इसे कम करने की दिशा में सार्थक पहल की जा सकेगी।

3. उद्देश्य :

अतः प्रत्येक क्रिया का कुछ उद्देश्य अवश्य होता है बिना उद्देश्य के विभिन्न प्रकार कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध कार्य किया जाता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में निम्नलिखित उद्देश्य है –

- राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के प्रभाव का शहरी एवं ग्रामीण अंचल के क्षेत्रों में तुलनात्मक अध्ययन करना।
- शोध क्षेत्र में रमसा अभियान के मानीटरिंग की स्थिति का अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ :

1. "शोध क्षेत्र के शहरी तथा ग्रामीण अंचल में रमसा अभियान के प्रभावों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"
2. "शोध क्षेत्र में रमसा अभियान के मानीटरिंग की स्थिति संतोषजनक नहीं है"

5. शोध समस्या का सीमांकन :

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र रीवा जिला है। अध्ययन में रीवा जिले के शहरी तथा ग्रामीण दोनों क्षेत्रों से हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों को लिया गया है। प्रस्तुत शोध में कक्षा–10 के छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

समष्टि व प्रतिदर्श : प्रस्तुत शोध अध्ययन में रमसा व लोकव्यापीकरण के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु शासकीय प्रयासों एवं प्रभावों का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित प्रत्येक विकासखण्ड से 5–5 शासकीय हाईस्कूल स्तर के विद्यालय जिसमें 2 शहरी क्षेत्र तथा 3 ग्रामीण क्षेत्र से कुल 45 विद्यालय, प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य अर्थात कुल 45 प्राचार्य, प्रत्येक विद्यालयों से 3–3 शिक्षक कुल 135 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय से 10–10 छात्र–छात्राएं कुल 450 विद्यार्थी, प्रत्येक विद्यालय से 2–2 अभिभावक कुल 90 अभिभावक व जिला स्तर पर रमसा प्रभारी का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

6. अध्ययन विधि :

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधि :** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साक्षात्कार विधि :** शैक्षिक अनुसंधान में साक्षात्कार विधि का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। इस विधि के द्वारा गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनो प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस अनुसंधान में भी शोधार्थी ने साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया है।
- **साख्यिकीय विधि :** सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विष्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिशत (%), S.D., Chisquare test, 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण :

प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित अधिकारी, प्राचार्य, अभिभावक साक्षात्कार प्रपत्र, शिक्षक एवं छात्र प्रश्नावली प्रपत्र के माध्यम से राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अन्तर्गत शोध क्षेत्र में हाईस्कूल स्तर की शिक्षा की वस्तुस्थिति ज्ञात की गयी है। तथा छात्रों के अधिगम स्तर ज्ञात करने के लिए परीक्षाफल तथा स्वनिर्मित प्रश्नों के द्वारा परीक्षण किया गया है।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से यादव एवं सिंह (2018)[1], अंसारी, एम.एम. (1988)[2], मेहता, सी. (1970)[3], निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. (1993)[4], पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार (2007)[5], पाण्डेय, आर.एस. (1997)[6], पाठक, पी.डी (2007)[7], सिंह एवं सिंह (2017)[8] एवं शुक्ल एवं सिंह (2017)[9] ने शोध विधि एवं राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के प्रभावों का शहरी एवं ग्रामीण अंचल के छात्रों के अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. रीवा जिले का सामान्य परिचय :

जिला रीवा मध्य प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी कोने में स्थित है। रीवा का नामकरण नर्मदा नदी के दूसरे नाम 'रेवा' पर आधारित है। रीवा नगर का नाम पहले शायद 'रेवा' रखा गया था। उसी का बिगड़ा रूप अब रीवा बन गया है।

इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेश का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है। इसका आकार लगभग त्रिभुज के समान है। इसका विस्तार 24.18^0 उत्तरी अक्षांश से 25^0 उत्तरी अक्षांश तथा 81.2^0 पूर्वी देक्षांश से 82.18^0 पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयेाग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीब) किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1 : "शोध क्षेत्र के शहरी तथा ग्रामीण अंचल में रमसा अभियान के प्रभावों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

तालिका क्र. 2 : शहरी तथा ग्रामीण अंचल में रमसा अभियान के प्रभाव से उनके शैक्षिक अधिगम का अध्ययन

समूह		शहरी अंचल के छात्र	ग्रामीण अंचल के छात्र
समूह की संख्या (छ)		180	270
मध्यमान (ड)		60.67	56.70
मानक विचलन (SD)		17.29	17.22
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		2.39	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

11. विश्लेषण एवं व्याख्या :

उपर्युक्त तालिका में शहरी तथा ग्रामीण अंचल में रमसा अभियान के प्रभाव से उनके शैक्षिक अधिगम के लिए दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 60.67 तथा 56.70 तथा मानक विचलन क्रमशः 17.29 तथा 17.22 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (ब्त्ए ज्मेज) किया गया, जिसमें ब् का मान 2.39 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 से कम तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से कम है। अतः शैक्षिक अधिगम के लिए दोनों समूहों में सार्थक अन्तर पाया गया।

अतः उपरोक्त के आधार पर यह तथ्य सामने आता है कि शहरी तथा ग्रामीण अंचल में रमसा अभियान के द्वारा किए जा रहें प्रयासों से उनके शैक्षिक अधिगम के मध्यमान बराबर है और इन दोनों मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शहरी तथा ग्रामीण अंचल में रमसा अभियान के द्वारा किए जा रहें प्रयासों से उनके शैक्षिक अधिगम में कोई अन्तर नही पाया जाता है। यह परिकल्पना के संगत है।

अतः परिकल्पना आंशिक सत्यापित होती है।

परिकल्पना क्र. 2 : "शोध क्षेत्र में रमसा अभियान के मानीटरिंग की स्थिति संतोषजनक नहीं है"

तालिका क्रमांक – 2: राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के मानीटरिंग की स्थिति का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श में चयनित	संख्या	मानीटरिंग की स्थिति संतोषजनक					
			है		नहीं है		पता नहीं	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1ण	अधिकारी	27	27	100.00	.	.	.	.
2ण	प्राचार्य	45	45	100.00	.	.	.	.
3ण	षिक्षक	135	109	80.74	15	11.11	11	8.15
4ण	विद्यार्थी	450	380	84.44	34	7.56	35	7.78
5ण	अभिभावक	90	62	68.89	17	18.89	11	12.22
	योग	747	623	83.40	66	8.84	57	7.63

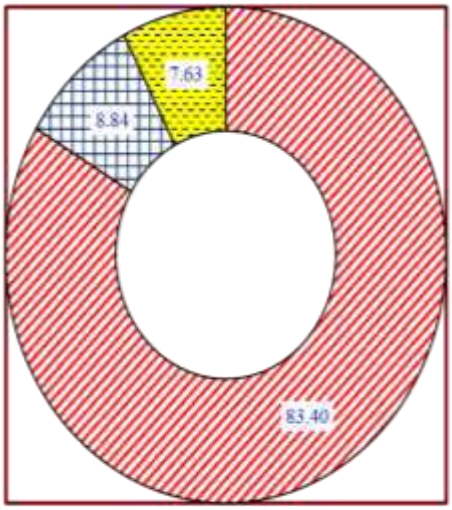

आरेख क्र. 1 : राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के मानीटरिंग की स्थिति का अध्ययन

12. विश्लेषण एवं व्याख्या :

तालिका क्र. 2 एवं आरेख क्र. 1 से यह स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र के 83.40 प्रतिशत यह मानते हैं, कि राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के मानीटरिंग की स्थिति संतोषजनक है। 8.84 प्रतिशत यह मानते हैं, कि राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के मानीटरिंग की स्थिति संतोषजनक नहीं है, जबकि 7.63 प्रतिशत को इसके सम्बंध में कोई जानकारी नहीं है।

सांख्यिकीय विष्लेशण इकाई वर्ग की गणना

आवृत्ति	मानीटरिंग की स्थिति संतोषजनक		
	है	नहीं है	पता नहीं
F_o	623	66	57
F_e	248.67	248.67	248.67
F_o-F_e	374.33	-182.67	-191.67
$(F_o-F_e)^2$	140125.44	33367.11	36736.11
$\frac{(F_o-F_e)^2}{F_e}$	563.51	134.18	147.73

$$\chi^2 = \sum \frac{(F_0 - F_e)^2}{F_e}$$

χ^2 = 845.42
df = (r-1)(c-1)
df = (2-1)(3-1)
df = 1 x 2
df = 2

13. विश्लेषण एवं व्याख्या :

राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के मानीटरिंग की स्थिति ज्ञात करने के लिए प्राप्त आंकड़ों को काई वर्ग द्वारा विश्लेषित किया गया। गणना द्वारा χ^2 का मान 845.42 है, जबकि तालिकामान 2df पर तथा 0.05 व 0.01 स्तर (level) पर क्रमशः 5.99 व 9.21 है। गणना मान अधिक होने के कारण सार्थक है कि राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के मानीटरिंग की स्थिति संतोषजनक है। यह परिकल्पना के असंगत है।
अतः परिकल्पना निरसित होती है।

14. निष्कर्ष :

1. राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अन्तर्गत शोध क्षेत्र में हाईस्कूल स्तर की शिक्षा में काफी प्रयास किये जा रहे है।
2. शोध क्षेत्र राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के मानीटरिंग की स्थिति संतोषजनक है।

15. सन्दर्भ ग्रंथ :

1. यादव, विजय शंकर एवं सिंह, डॉ.डी.एस. बघेल – इलाहाबाद जिले में माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की तार्किक योग्यता का अध्ययन, International Journal of Advanced Education and Research 2018; 3(4):46-49.
2. गुप्ता, एस0पी0 तथा गुप्ता, अल्का (2008) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
3. .मेहता, सी. – 'नेशनल पॉलिसीर ऑफ एलिमेन्ट्री टीचर एजूकेशन इन इण्डिया'', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 1970.
4. निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. –''भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें'' (प्रथम संस्करण) कनिष्ठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993.
5. पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार – भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार : दशा और दिशा, कुरुक्षेत्र मासिक पत्रिका, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2007, वर्ष 53, अंक 11, पृ. 7–9.
6. पाण्डेय, आर.एस. – 'एजूकेशन एस्टर डे एण्ड टुडे' (एक विश्लेषण) हॉरिजन पब्लिशर्स, इलाहाबाद, 1997.
7. पाठक, पी.डी – भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें इक्कीसवाँ संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 2007.
8. सिंह, प्रदीप कुमार एवं जय सिंह, "रीवा जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन", International Journal of Advanced Education and Research 2019;4(2):74-76.
9. शुक्ल, प्रमोद एवं जय सिंह, "रीवा जिल में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक तकनीकी की उपलब्धता का तुलनात्मक अध्ययन", International Journal of Advanced Research and Development 2019;4(2):53-55.